UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 16 विश्वबन्धुत्वम्

शब्दार्थाः- नितराम् = पूरी तरह से, अपरिहार्या = अनिवार्य, सम्भवति = सम्भव हो सकता है, परोवेति = दूसरे का है ऐसा मानकर। लघुचेतसाम् = छोटे हृदय वालों का, शब्दार्थाः-साम्प्रतम् = इस समय, सन्तर्तुम् = पार करने के लिए, आक्रान्ताम् = भयभीत, भ्रान्ताः = भटके हुए, हन्ता = मारने वाला, सञ्जातः = ठीक तरह से हो गया, प्रेम्णः = प्रेम का, नियन्तैकः = नियंता एक है, मनीषिणा = विद्वानों से, निरामयाः = रोगरहित, भद्राणि = कल्याण, नितान्तम् = अतिशय, अत्यधिक।

विश्वस्य सर्वान् ..... कुटुम्बकम्।

हिन्दी अनुवाद – संसार के सभी लोगों के प्रति बन्धुत्व भाव ही विश्वबन्धुत्व कहा जाता है। शान्तिमय जीवन के लिए विश्वबन्धुत्व की भावना अति महत्त्व रखती है। ऐसी एक अनिवार्य आवश्यकता है। सभी लोगों का कल्याण और सभी लोगों का सुख भाईचारे के बिना सम्भव नहीं है। विश्वबन्धुत्व के ही भाव को दृष्टि में रखकर किसी विद्वान ने कहा है
यह अपना है, यह पराया है, ऐसी गणना तुच्छ हृदय वालों में होती है, उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो समस्त पृथ्वी ही परिवार होती है।"

साम्प्रतम् ..... अभावः एव।

हिन्दी अनुवाद – इस समय सम्पूर्ण संसार में कलह और अशान्ति का साम्राज्य व्याप्त है, जिससे सबसे अधिक साधन सम्पन्न मनुष्य भी सुख के स्थान पर दुख का अनुभव कर रहा है। यद्यपि विज्ञान के बल से वह वायुयान से आकाश में विचरण करने, पानी के जहाज से समुद्रों में अच्छी तरह तैरने, रेल से भ्रमण करने और चन्द्र आदि ग्रहों पर जाने में समर्थ है, फिर भी आपसी सम्बन्धों की कटुता से मनुष्य अशांत ही दिखाई देता है और कष्ट भोग रहा है। इसका प्रधान कारण विश्वबन्धुत्व का अभाव ही है।

विगतयोः ..... प्रसारो भवेत्।

हिन्दी अनुवाद – विगत दोनों विश्व युद्धों की विनाशलीला को सभी जानते ही हैं। इस समय तीसरे विश्व युद्ध का भय हमेशा मनुष्य जाति के हृदय को आक्रान्त कर रहा है, जिससे संसार का भयंकर विनाश हो सकता है। इसलिए आवश्यकता है कि मनुष्य-मनुष्य के प्रति भाई के समान आचरण करे। एक देश, दूसरे देश के साथ भाईचारे का व्यवहार करे। बलवान देश, कमजोर देशों पर आक्रमण न करें। स्वार्थ, विस्तारवाद और महत्त्वाकांक्षा के स्थान पर परोपकार, दया, त्याग, आपसी सहयोग और मानवीय मूल्यों का प्रसार हो।

यद्यपि ..... दुर्लभा जाता।

हिन्दी अनुवाद – यद्यपि शान्ति स्थापना के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ, निर्गुट आन्दोलन और दूसरे संगठन निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं, फिर भी स्वार्थ, अहंकार और शक्ति बढ़ाने की दूषित भावना से भ्रमित हुए कुछ देश संघर्षरत हैं, जिससे विरोध और अशान्ति बढ़ रही है। इससे मनुष्य-मनुष्य के खून का प्यासा हो जाता है। सर्वत्र प्रेम और भाईचारे की कमी है, जिसके बिना जीवन में शान्ति दुर्लभ है।

https://www.evidyarthi.in/

संसारे सर्वेषु ..... भवेत॥”

हिन्दी अनुवाद – संसार में सभी मनुष्यों में समान रक्त प्रवाहित होता है और सभी का नियंता एक ही है। यह सब जानते हुए भी लोग स्वार्थी होने के कारण आपस में कलह करते हैं। इसका मूल कारण विश्वबंधुत्व का अभाव है; अतः सभी में विश्वबंधुत्व की भावना अत्यन्त आवश्यक है। विश्वबंधुत्व में यही भावना व्याप्त है सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी कल्याण को देखें, कोई दुख का भागी न हो।

https://www.evidyarthi.in/